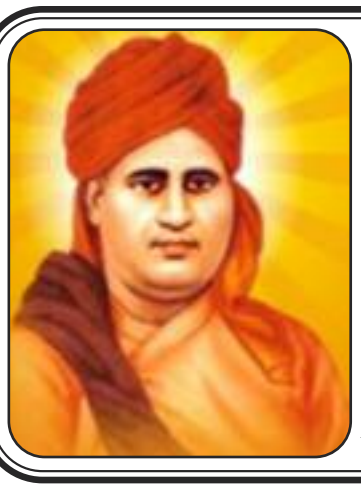

आर्योदया

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye No. 298 | ARYA SABHA MAURITIUS | *10th Nov. to 22nd Nov. 2014*

ओ३म् अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।।

ऋग्वेद १/१/१

Om ! Agnimidé purohitam yajyasya devamritvijam. Hotāram ratnadhātamam.

Rig Veda 1/1/1

Glossaire / Shabdārtha :

Agni : (a) Le feu matériel dans ses diverses manifestations : la flamme, la lumière, la chaleur, l'énergie, la puissance, le dynamisme.

(b) C'est le premier mot du premier verset (mantra) du Rig Veda – "Agni Shukta" où le thème principal est "Agni" (le feu). Il y a mention de trois aspects ou phases d'Agni que nous invoquons tous et qui nous est indispensable dans le vie.

Ces trois aspects d'Agni sont : (i) "**Adhibhowtik**" – L'aspect matériel ou physique
(ii) **Adhydayvik** – l'aspect psychologique et naturel
(iii) **Adhyātmik** – l'aspect spirituel

(chers lecteurs, veuillez lire à la fin une note avec beaucoup de détails sur les trois aspects d'Agni pour vous aider à mieux comprendre le thème de ce mantra)

Idé : Agni que nous vénérons, nous adorons, nous prions pour tous ses bienfaits et son utilité.

Purohitam : Dieu, Notre Seigneur, détient et gère l'univers tout entier. Il existait avant et pendant la création de l'univers, est en existence actuellement et existera éternellement pour assurer le bien-être et le salut de tout le monde.

Yajyasya : L'éducation, la science, les valeurs humaines, la technologie, l'art, le travail intellectuel, l'artisanat, les beaux-arts, la spiritualité, et bien d'autres disciplines.

Devam : (i) Les sages qui éclairent notre esprit, nous indiquent la bonne voie à suivre et pourvoient à nos besoins.

(ii) Celui qui, dans le champ de bataille, nous aide, nous guide en nous inspirant des stratégies percutantes, et nous indique l'utilisation des armes efficaces pour anéantir nos ennemis.

Ritvijam : (i) Dès la création du monde, c'est notre Seigneur Tout Puissant, qui se charge d'établir l'équilibre dans la nature et pourvoit tous ses attraits pour rendre chaque saison agréable et bénéfique à l'homme et à toutes les créatures de la terre.

(ii) C'est Lui qui aide à l'épanouissement de tous les aspects culturels.

Hotāram : C'est Lui qui nous confère le bonheur, Le confort, la paix et la joie de vivre.

Ratnadhātamam : (i) C'est Lui qui détient toute la richesse matérielle et précieuse de la terre.

(ii) C'est Lui qui possède toutes les qualités intellectuelles, spirituelles et divines.

cont. on pg 4

N. Ghoorah

बरेली (भारत) के आर्य समाज द्वारा प्रह्लाद रामशरण का अभिनन्दन

मॉरीशसीय आर्य समाज और हिंदी-आंदोलन पर महत्वपूर्ण व्याख्यान

रिपोर्ट : श्री रणजीत पंचाले

गत १ जून को मॉरिशस के सुप्रसिद्ध इतिहासकार, साहित्यकार एवं आर्य विद्वान प्रह्लाद रामशरण का भारत के बरेली नगर के सबसे प्राचीन बरेली कालेज में आर्य समाज, बिहारीपुर द्वारा अभिनन्दन किया गया। स्वामी ब्रह्मनंद सरस्वती, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ज्वलंत कुमार शास्त्री (अमेठी) ने प्रह्लाद रामशरण को उत्तरीय, स्मति चिह्न, आर्ष साहित्य तथा संस्कृत में अभिनन्दन-पत्र भेंट करके सम्मानित किया।

'मॉरीशस में हिन्दी की दशा एवं दिशा' विषय पर दिए गए अपने व्याख्यान में रामशरण ने बताया कि क्रियोली, अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाषाओं के वर्चस्व वाले देश मॉरीशस में हिंदी और भोजपुरी भाषाओं को स्थापित करने के लिए भारतवंशियों को कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। उन्होंने मणिलाल डॉक्टर, पं. आत्माराम विश्वनाथ, पं.वासुदेव विष्णुदयाल और मॉरिशस के राष्ट्रपिता डॉ.शिवसागर रामगुलाम की मॉरीशस के हिंदी-आंदोलन में ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने कठिन दौर में आप्रवासी भारतीयों में हिन्दी के प्रति गौरव की भावना अक्षुण्ण रखकर भारतीय संस्कृति की रक्षा की थी।

प्रह्लाद रामशरण ने मॉरीशस में हिन्दी को जीवित रखने का सबसे अधिक श्रेय आर्य समाज को दिया जिसने गांव-गांव में हिंदी का प्रसार किया। यह देश के हिंदी-प्रेमियों के सतत संघर्षों का ही परिणाम है कि आज मॉरीशस में हिन्दी प्राथमिक स्कूल से विश्वविद्यालयीय स्तर तक पढ़ाई जा रही है।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

सम्पादकीय

जल का सदुपयोग

जल एक महत्वपूर्ण तत्व है। यह तत्व हमारे जीवन का आधार है । जल के बिना जीवित रहना असम्भव है। हमारे शरीर के निर्माण में निम्न पाँच तत्व (elements) बड़े ही सहायक माने जाते हैं, वे हैं – आकाश, पृथ्वी, वायु अग्नि और जल। ये पाँचों तत्व हमारे देवता हैं। हमें जीवन दान देने वाले हैं।

वेदों में वायु, अग्नि और आपः अर्थात् जल शब्द के महत्व पर बहुत प्रकाश डाला गया है। जिसमें एक मन्त्र इस प्रकार है - ***ओ३म् । आपोहिष्ठा मयो भूवस्ता न ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे ।***

इस मन्त्र का सरल भाव यह है कि जल हमारे जीवन का दूसरा नाम है। जल तो जीवन है, इसके बिना कुछ कार्य नहीं हो सकता। अतः ईश्वर से यह प्रार्थना की गई कि हमारे सुखानन्द के लिए सदा जल प्राप्त होता रहे । हमें तेज़ शक्ति प्रदान करता रहे, ताकि हमें शत्रुओं से सामना करने का बल प्राप्त हो। इत्यादि।

जल एक ऐसा महत्व पूर्ण तत्व है जिसका दुरुपयोग करना पाप माना जाता है। उसे व्यर्थ में नष्ट करने का मतलब है – अपने जीवन को खतरे में डालना। इसीलिए हमें बड़ी समझदारी के साथ जल का सदुपयोग करना चाहिए। जितना उसकी आवश्यकता हो, उतना ही उसका प्रयोग करना चाहिए, ताकि जल का बचाव होता रहे। जल जैसे पदार्थ को दूषित करना नादानी है, अपने ही को तथा अन्यों को हानि पहुँचाने का दुष्कर्म है। आज बहुत से नासमझ व्यक्ति अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए वायु मण्डल को दूषित कर रहे हैं, जिससे हमारे जलवायु और पृथ्वी के तापमान पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। भूमण्डल का तापमान अति उष्ण हो जाने से संसार के अनेक देशों में वर्षा की कमी होने लगी है और जल का अभाव महसूस हो रहा है। बारिश के अभाव में गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। सूखा पड़ने से सारी वनस्पतियाँ सूखकर नष्ट हो रहीं हैं। खाद्य पदार्थों को प्राप्त करना दुर्लभ हो गया है। असंख्य जीवों की जाने पानी के बिना जा रही हैं, जो एक चिन्ता जनक समस्या बन गई है।

जीवन प्रदान करने वाले अमृत-तुल्य जल के अभाव में कई समृद्धिशाली देश भी चिन्तित हैं। उन सम्पतिशाली देशों में आपात-कालिक स्थितियाँ उत्पन्न होने से वहाँ कई प्रकार की गम्भीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। जल की खोज में उनकी सम्पत्ति बेकार नज़र आ रही है। हम परमात्मा से प्रार्थना करें कि हमारे देश में कभी जल की कभी महसूस न होवें। सारे भूमण्डल में भरपुर जल हो ताकि विश्व के समस्त प्राणियों का कल्याण हो सके।

प्रिय पाठको ! परोपकारी जल हमारे प्राणों का रक्षक है। जीवन में जल का उचित उपयोग करना और निरन्तर उसकी बचत करने की आदत डालना ही 'जल पूजा' है। आगामी ६ नवम्बर को गंगा स्नान पर्व है। जल देवता की पूजा करने का पावन उत्सव है। आर्य सभा के तत्वावधान में, आर्य ज़िला परिषदों एवं समस्त शाखा समाजों के पूरे सहयोग से अनेक समुद्र तटों पर यज्ञ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस पावन पर्व के उपलक्ष्य में हम परमात्मा से प्रार्थना करेंगे कि हमारे इस सुन्दर देश में कभी भी जल की कमी न हो। हमारे देश में हमेशा वर्षा होती रहे। बारिश से हमारे खेत, जंगल और वनस्पतियाँ खिले रहे। बरसात से हमारी ज़मीन पर अनाजों और फल-फूलों का भरमार हो। सारे तालाब और जलाशय भरपुर हो, ताकि मोरिशवासियों को आपातकालिक समस्यों का सामाना न करना पड़े।

बालचन्द तानाकूर

स्वाधीन देश के नागरिक

बालचन्द तानाकूर

हम स्वाधीन मॉरीशस देश के नागरिक हैं। हम स्वतन्त्रता पूर्वक जीने के अधिकारी हैं। देश के संविधान अनुसार हर चुनाव में मतदान देकर अपने देश के शासक चुनने का पूरा अधिकार हमें प्राप्त है। यहाँ के मतदाता अपनी सूझ-बूझ के साथ अपने सुयोग्य उम्मेदवारों को वोट देते हैं।

जनता और सरकार के हित में कार्य करने वाले राजनीतिक दल को आम चुनाव में निर्वाचित करते हैं। कभी भी किसी स्वार्थी या देशद्रोहियों को विजयी नहीं करते हैं, जिनकी शासन व्यवस्था और बनाए गए कानून से राष्ट्र तथा प्रजा का पतन हो।

मॉरीशस एक गणतंत्रात्मक देश है। पाँच वर्षों बाद हमारे देश में आम चुनाव आयोजित किया जाता है। हम हर एक चुनाव में देश की सत्ता देश-भक्तों के हाथ में सौंपते हैं। इस वर्ष पुनः आम चुनाव होने वाला है। सभी मतदाताओं को फिर एक बार अपना मतदान देने का अवसर है। हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम उन्हीं राजनीतिक दल के हक में वोट देकर उन्हें विजयी बनाएँ, जो राष्ट्र की उन्नति में सदा समर्पित हो। सभी जातियों के धर्म, संस्कृति, सभ्यता और भाषा को सुरक्षित रखने में प्रयत्नशील हो।

चुनाव आयोग के ठोस प्रबन्ध से तथा समस्त जनता के सहयोग से इस वर्ष के चुनाव अभियान में मॉरीशस, रोड्रिग्स और आगालेगा में बड़े शान्ति पूर्ण वातावरण में चुनाव का आयोजन हो, ऐसी हमारी आशा है। हम सारे देश वासी इसी विश्वास में हैं कि नवनिर्वाचित शासक अपनी मातृभूमि के उत्थान में कार्य करेंगे।

मॉरीशस को हिन्द महासागर का चमकता सितारा माना जाता है। हम सभी देशवासी एक दूसरे के प्रेम, सहयोग तथा अपने अनुभव और पुरुषार्य से राष्ट्र की उन्नति में संलग्न हैं। देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए कर्तव्य परायण हैं। हमारी यही आशा रहती है कि यह प्यारा देश विश्व प्रसिद्धि प्राप्त करता रहे और अन्य विकासशील देशों का सहयोग इसे मिलता रहे।

हमारे लोकतंत्रात्मक देश की लोकतंत्रात्मकता हम नागरिकों के हाथ में है। हम जैसा चाहेंगे, वैसा ही हमारा देश होगा। इस देश का उत्थान-पतन हमारे ही हाथों में है। आजकल चुनाव अभियान चल रहा है। हर एक राजनैतिक दल ज़ोर-शोर से आंदोलन कर रहे हैं। इस चुनाव में भाग लेकर अपनी समझदारी और सूझ-बूझ से सत्ता संभालने वालों को मतदान देना प्रत्येक मतदाता का कर्त्तव्य है। हम अपने देशभक्त पाठकों से आग्रह करते हैं कि बड़े शान्तिमय वातावरण में अपना वोट दें। मतदान देने का अपना अधिकार खोने की भूल न करें, क्योंकि इस स्वाधीन देश के भविष्य को उन्नति के शिखर पर पहुँचाना हम सभी देशवासियों का लक्ष्य है। *जय मॉरीशस।*

शरीर एक दिव्य मंदिर और यज्ञशाला है।

डॉ. विनय सितिजोरी

वेदों में मानव शरीर को एक पवित्र मंदिर के रूप में उल्लेख किया गया है, जिसमें सभी देवता निवास करते हैं। इस शरीर रूपी दिव्य आश्रम का सप्तर्षि रातों-दिन संरक्षण करते हैं।

"सप्त ऋषयः प्रतिहिताःशरीर सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्"

यह मानव शरीर सप्त सरिताओं का पवित्र तीर्थ स्थान है, जो जागतावस्था में बाहर जाता है और सुप्तावस्था में वापस आता है, यह शरीर पवित्र यज्ञशाला है, जिसके लिए दो देव दिन-रात सुनद्ध हैं। साथ ही यह शरीर देवालय है, यहाँ सूर्य नेत्रों में ज्योति बनकर, वायु छाती में प्राण बनकर, अग्नि मुख में वाणी तथा उदर में जठराग्नि बनकर और तैंतीस देवता अंश रूप में आकर निवास करते हैं। देवों का निवास स्थान शरीर रूपी मन्दिर व यज्ञशाला हुआ।

जब पंचमहाभूतों से एक पुरुष आकृति का निर्माण कर ईश्वर ने उसे क्षधा-पिपासा (भूख-प्यास) से अभिभूत कर दिया तब इंद्रियाभिमानी देवताओं ने परमेश्वर से कहा कि हमारे योग्य स्थान बताएँ, देवताओं के इस आग्रह पर जल से गौ और अश्व के आकार युक्त एक पिंड मानव शरीर के रूप में बाहर आया।

परमेश्वर ने कहा – **"ता अब्रवीद्यायतनं प्रविशतेति"** अर्थात हे पंचमहाभूत अपने-अपने योग्य ओश्रय स्थानों में तुम लोग प्रवेश करो। तब अग्नि ने वाणी होकर मुख में, वायु प्राण होकर नासिकाछिद्र में, सूर्य प्रकाश बनकर आँखों में दिशाएँ श्रोत्रेंद्रिय बनकर कानों में, औषधियाँ व वनस्पतियाँ लोम बनकर त्वचा में, चन्द्रमा मन होकर हृदय में, मृत्यु अपान वायु बनकर नाभि में और जलदेवता वीर्य बनकर शिश्नेंद्रिय में प्रवेश किया।

उपनिषद में कहा गया है कि मानव शरीर देवालय (मंदिर) है। वह मंदिर जहाँ यज्ञ होता है याने मानव शरीर यज्ञशाला है क्योंकि "चन्द्रमा मन होकर हृदय में प्रवेश किया है और चन्द्रमा का गर्भवृद्धि पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

वैदिक मंत्रों में भी इसका संकेत मिलता है। चन्द्रमा में मातृवृत्ति एवं मातृतत्व पाये जाते हैं, इसलिए सूर्य की ज्ञानमय प्रखर किरणों को पचाकर और उन्हें भावनामय सौम्य रूप देकर माता के हृदय में रहने वाले कोमल गर्भ तक उस जीवनामृत को पहुँचाने का प्रेमल और कुशल कार्य निरंतर करते रहते हैं।

"नर तन सम नहिं कवनिउ देही"- मानव शरीर के समान और कुछ भी तो नहीं यह देवतुल्य, देव दुर्लभ शरीर ही देवालय है। शरीर रूपी मंदिर में देवों का वास है, इसलिए मन के रोगों यानी मानसिक रोगों का उपचार किए बिना न तो शारीरिक रोग दूर होंगे और न ही इस शरीर में निवास करने वाले देव ही प्रसन्न होंगे।

शास्त्रों के अनुसार **'रसौ वै सः'** सृष्टि का मूल तत्व रस रूप शरीर ही है। संत तुकाराम ने कहा है- *'मन का प्रसन्न सर्व सिद्धि चे कारण* - अर्थात मन को प्रसन्न रखो, वही सब सिद्धियों का मूल है।

वेद का भी यही कथन है–

समदोषः समाग्नि समधातुमलक्रियः ।
प्रसन्नात्मेंद्रियमनाः स्वस्थ इत्यमिधीयते।।

त्रिदोषों, त्रयोदश अग्नियों और धातु-प्रक्रिया की समता तथा आत्मा इंद्रिय और मन की प्रसन्नता स्वास्थ्य का सूचक है। मानसिक रोगों का उपचार ही शारीरिक स्वस्थता की प्रमुख शर्त है। मानसिक रोगों की, सर्वश्रेष्ठ औषधि है- 'भगवत नाम स्मरण - प्रार्थना, संध्या, यज्ञ, हवन, योग, प्राणायाम, साधना ऐसी व्यवस्था एवं उपाय स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर के सौ नामों को दर्शाया है। व्यावहारिक रूप में यज्ञ साधाना करने से शरीर, यज्ञशाला अर्थात शरीर 'यज्ञ का मंदीर' बन जाता है। इसलिए हमारे वैदिक ऋषि मुनियों ने शरीर को मंदिर माना है। अतः प्रतिदिन यज्ञ करने से इस लोक में स्वस्थ तो रहेंगे ही, परलोक में भी स्थान सुरक्षित हो जाएगा। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने-पढ़ाने से सत्य का ज्ञान होगा तथा आहार विचार, शुध्द व्यवहार से भी शरीर मंदिर बनेगा ही।

आर्य सभा में ३ पुस्तकों का लोकार्पण

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

आर्य सभा, पोर्ट लुई में शनिवार २४ मई २०१४ को हिन्दी लेखक संघ के तत्वावधान में इन तीन पुस्तकों का लोकार्पण हुआ –

(१) गागर में सागर–इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ कृत २.२४४ हाइकु कविताओं का महाकाव्य

(२) मोरीशस के हिन्दी लेखक–लेखिकाएँ- लेखक इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

(३) A tribute to Pt. Dharmaveer Ghura, in English Edited by Indradev Bholah and translated by Dr. Vidoor Dilchand.,

प्रधान आसन डॉ हेमराज सुन्दर ने ग्रहण किया था और मान्य अतिथि थे मान० प्रतिभा भोला P.P.S और भारत से आए प्रो० भीमसिंह जो कुरुक्षेत्र, हरियाना यूनिवर्सिटी में कार्यरत प्रोफेसर है। श्रीमती बिंदवन्ती अजोध्या-तिलक, महामंत्री लेखक संघ, ने प्रस्तुतीकरण किया।

लेखक संघ के प्रधान डॉ लालदेव अंचराज ने पधारे हुए सभी लोगों को उनकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने लेखक संघ के संस्थापक स्वर्गीय डॉ मुनीश्वरलाल चिंतामणि तथा पं० धर्मवीर घूरा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि मोरीशस में हिन्दी की पढ़ाई तो हो रही थी पर लेखन की ओर कम ध्यान दिया जा रहा था तो साहित्य सृजन को ध्यान में रखकर लेखकों का मार्गदर्शन व लेखकों के प्रादुर्भाव करने के उदेश्य से डॉ मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने ९ दिसम्बर १९६१ को हिन्दी लेखक संघ की स्थापना की थी। मौके पर स्वर स्वर्गीय आचार्य बालमुकुन्द दिवेदी ने कहा था कि भले कि आज मोरीशस में सशक्त हिन्दी लेखक पैदा होंगे और भारत के लेखकों के स्तर की रचनाएँ कर पायेंगे। आज उनकी बह भविष्यवाणी सार्थक हो रही है।

डॉ हेमराज सुन्दर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी लेखक संघ दवारा साहित्य सृजन में उसके योगदान के लिए प्रशंसा की और ऊपर कथित तीन पुस्तकों का जो विमोचन होने जा रहा था , उसपर कहा और विशेषकर इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ के हाइकु महाकाव्य पर प्रकाश डाला। हाइकु लेखन शिल्प का विश्लेषण करते हुए कहा कि जापानी 'हाइकु' शिल्प के ५,७,५ अक्षरों के क्रमावली,१७ अक्षरीय वाले तीन पद अर्थात् तीन छोटे व अदूरे वाक्य होते हैं अर्थात् यह लघुतम कविता रचना है पर उसका भावगम्भीर होता है, उसको लिखना उतना आसान नहीं होता है। उन्होंने एक दो उदाहरण भी दिये जैसे –

(१) सभ्य युग में बर्बता, घृष्टता रोती सभ्यता।
(२) झूठ का सिक्का सच्चाई की मंडी में अस्तित्व फीका ।

उन्होंने कहा कि इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ ने २.२४४ हाइकुओं का महाकाव्य लिखकर कीर्तिमान स्थापित किया है। हाइकु लेखन में मोरीशसके लेखक उनसे प्रेरणा पायेंगे।

मान० प्रतिभा भोला ने लेखक संघ को ५३ सालों तक सक्रिय जीवित रखने के लिए संघ के कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि डॉ मुनीश्वरलाल चिंतामणि और पं० धर्मवीर घूरा नहीं रहे पर उनके कार्यो से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि पुस्तक प्रेरणा है। बच्चों को पुस्तकें पढ़ने को प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने दुख प्रकट किया कि लेखिकाएँ कम संख्या में हैं। डॉ सरिता बुद्धू तथा सीता रामयाद जैसी लेखिकाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए।

डॉ भीमसिंह जी जो कुरुक्षेत्र, हरियाना की यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर हैं उन्होंने साहित्य की मान्यताओं और जीवन की परिभाषा पर बातें करते हुए कहा कि साहित्य समाज से जुड़ा हुआ होता है जो सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का प्रतीक है। श्री सत्यदेव प्रीतम, उपप्रधान आर्य सभा, ने लेखक संघ की स्थापना के प्रथम जुटाव को याद दिलाते हुए कहा कि स्थापना में पाँच आर्य समाजियों का सहयोग था। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का खड़ी बोली के विकास में उसके महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख किया।

उस साहित्यिक समारोह में डॉ हेमराज सुन्दर,मान० प्रतिभा भोला, फ्रो० भीमसिंह तथा इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ को पुष्पहार से सम्मानित किया गया।

यहाँ उल्लेखनीय है कि लेखक संघ के मान्य प्रधान इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ को भारत में विक्रमशिला हिन्दी विद्या पीठ द्वारा उनके ५० साल की लम्बी हिन्दी सेवा तथा इन चार महा ग्रन्थों (१) विदेशों में हिन्दी (२) आर्य समज और हिन्दी विश्व संदर्भ में (३) प्रतिध्वनियाँ (२२२ कविताएँ) तथा (४) हाइकुमहाकाव्य (२,२४४ हाइकु कविताएँ) के अद्वितीय प्रणयन के लिए, उन्हें 'डाक्टर' की उपाधि से विभूषित किया है। १३-१४ दिसम्बर २०१३ को उज्जैन, मध्यप्रदेश में हुए सम्मान समारोह में वे आमंत्रित थे । उन्हें सम्मान पत्र और मेडल प्राप्त हुए हैं और उन्हें 'डाक्टर' मानक उपाधि से नवाजा गया है, इस सम्मान से पूरा मॉरीशस साहित्य सम्मानित हुआ है।

लुई जाकोल्यो

रामावध राम

प्राचीन भारत के विदेशी भक्तों में फ्राँसीसी विद्वान श्रीयुक्त लुई जाकोल्यो का स्थान सर्वोच है। ईस पुष्य आर्य-भूमि की प्राचीन ज्ञान गरिमा पर जितना मुग्ध आप हुए हैं, उसकी जितनी प्रशंसा मुक्त कंठ से आपने की है, उतनी और किसी भी विदेशी ने नहीं की। जाकोल्यो महाशय की दृष्टि में भारत जगतगुरू हैं जो समस्त संसार को सभ्यता, धर्म और ज्ञान का दान देता रहा है। आपने ही ईस पुस्तक का महत्व इसी से प्रकट हो जाएगा कि ऋषि दयानन्द जैसे मौलिक विचारक ने भी अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में इसका उल्लेख किया है। कहे तो कह सकते हैं।

आज के आर्य समाजी भी इतना स्पष्ट सत्य, धर्म, न्याय को अपनी कलम और मुख से प्रस्तुत करने में भय खाती है।

एतछेश प्रसूतस्य सकाशादग् जन्मन
स्वं सवंचरित्रं शिक्षेरनूष्टपृथिव्यां सर्वमानव

मनु महाराज के इस कथन को प्रमाणित करने के लिए ही यह पुस्तक लिकी गई है।

श्रीयुत जाकोल्यो चन्द्रनवार में फ्रेंच चीफ जसस्टिस् अर्थात मुख्य न्यायाधीश रहे।

इन्होंने राम शास्त्री नाम के ऐक विद्वान ब्राह्मण से संस्कृत तथा हिन्दू धर्म का पाठ लिया। इस अद्य्यन का फल यह हुआ कि आप ने भारत में बाईबल के रूप में भारत को श्रध्दांजलि अर्पित की।

आपने यह पुस्तक अपनी मातृ भाषा फ्रेंच में लिखी थी। छपने के बाद दूसरे ही वर्ष, इसका अग्रेजी में अनुवाद हो गया। श्रीयुत सतराम जी द्वारा अनूदित यह पुस्तक हिन्दू जाति के लिए विशेष महत्व रखती है। मूल पुस्तक का लेखक श्रीयुत जाकोल्यो, उस फ्रेंच जाति के ऐक रत्न थे, जो यूरोप मे सच्चाई और समता आदि उच्च भावो के साथ प्रेम रखने के लिए प्रसिध्द है। यूरोप महाव्दीप में केवल फ्रांसीसी लोग ही ऐसे उदारदिली है।

बरेली (भारत) के आर्य समाज द्वारा प्रह्लाद रामशरण का अभिनन्दन
मॉरीशसीय आर्य समाज और हिंदी-आंदोलन पर महत्वपूर्ण व्याख्यान

रिपोर्ट : श्री रणजीत पंचाले

पृष्ठ १ का शेष भाग

इनके अलावा सायंकालीन पाठशालाओं में हिंदी पढ़ाने वाले तीन-चार सौ अध्यापकों को भी वेतन देकर सरकार हिंदी की शिक्षा को प्रोत्साहन दे रही है। रेडियो-टीवी पर हिंदी के काफी कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में अभिमन्यु अनत, मुनीश्वरलाल चिंतामणि, रामदेव धुरंधर आदि साहित्यकारों ने काफी सृजन कार्य किया है और अब भी हिंदी -लेखक निरंतर सृजन कर रहे है।

उन्होंने इस बात पर अफ़सोस ज़ाहिर किया कि मॉरिशस में सरकारी भाषा अंग्रेज़ी और जन-भाषा फ्रेंच और क्रियोली होने के कारण वहां हिन्दी का एक भी दैनिक या साप्ताहिक पत्र प्रकाशित नहीं होता है।

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो महावीर अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि हिन्दी हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है। मन को मातृ भाषा ही स्पर्श कर सकती है। नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठताओं का स्मरण कराने तथा परम्पराओं से जोड़े रखने के लिए उसमे मातृभाषा के प्रति सम्मान के भाव को गहरा करना होगा। यदि हमने सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, जयशंकर प्रसाद, व्यास, वाल्मीकि और कालिदास जैसी साहित्यिक विभूतियों को भुला दिया, तो हमारी संस्कृति का क्षरण हो जायेगा।

राजा रणंजय सिंह महाविद्यालय (अमेठी) के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो.ज्वलंत कुमार शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानंद तथा आर्य समाज ने विभिन्न प्रांतों के लोगों को हिंदी से जोड़कर राष्ट्रीय एकता की नींव को मज़बूत किया था। द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल (देहरादून) की आचार्या डॉ.अन्नपूर्णा ने सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में को बांधने की हिन्दी की

क्षमताओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डॉ. रामप्रकाश शर्मा हिंदी सलाहकार समिति, भारत सरकार के पूर्व सदस्य ने भी विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर प्रो० महावीर अग्रवाल, प्रो० ज्वलंत कुमार शास्त्री, डॉ. अन्नपूर्णा आचार्या, डॉ. रामप्रकाश शर्मा तथा श्री गोपालाचार्य जी को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आर्य समाज, बिहारीपुर के प्रधान डॉ. ओपी अग्रवाल, डॉ.प्रतिभा मिश्रा, डॉ. एनएल शर्मा, साहित्यकार डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, रमेश गौतम, गोपाल विनोदी, राजेश गौड़, डॉ. इंद्रदेव त्रिवेदी, डॉ. मुरारीलाल सारस्वत, इतिहासकार रणजीत पांचाले, कृष्णा बजाज, पूर्णिमा शर्मा, राजेंद्र कुमार, संदीप अग्रवाल आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आरंभ में आचार्य (डॉ.) श्वेतकेतु शर्मा द्वारा सम्पादित "बरेली की आर्य विभूतियाँ" पुस्तक के द्वितीय संस्करण का विशिष्ट अतिथियों द्वारा लोकार्पण किया गया। इस पुस्तक में काफी शोध के बाद आर्य जगत के सुप्रसिध्द विद्वानों पंडित बिहारी लाल शस्त्री, डॉ. सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्य, आचार्य विश्वश्रवाः व्यास,आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र, महात्मा गोपाल सरस्वती, स्वामी इंद्रदेव यति और डॉ. संतोष कण्व की जीवनियां दी गई हैं।

इसके पूर्व सुबह आर्यसमाज, बिहारीपुर के सभागार में दिए गए अपने व्याख्यान में मॉरीशसीय विद्वान प्रह्लाद रामशरण ने मॉरीशसीय आर्यसमाज के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मॉरीशस में आर्यसमाज की विधिवत स्थापना १९१० में पोटलुई में हुई थी। समाज ने लोगों को सच्चे वैदिक ज्ञान से जोड़ा। अनेक स्कूल-कॉलेज खोले। वर्तमान समय में शहरों के अलवा, ४०० गावों में भी आर्यसमाज की शाखाएं हैं। मॉरीशस में आर्यसमाज एक शक्तिशाली संगठन है।

प्रह्लाद रामशरण के व्याख्यान से पूर्व उनका परिचय देते हुए साहित्यकार रणजीत पांचाले ने कहा कि रामशरण जी ने विभिन्न विधाओ में अब तक लगभग ७० पुस्तकों का प्रणयन किया है। उन्होंने आर्यसमाज सम्बन्धी नौ पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें फ्रेंच भाषा में लिखी गई स्वामी दयानंद की जीवनी भी है। वे १९८२ से १९८४ तक आर्यसभा मॉरीशस के मंत्री रहे हैं।

उन्होंने १९८३ में महर्षि दयानंद सरस्वती की निर्वाण-शताब्दी के अवसर पर मॉरिशस सरकार से स्वामी दयानंद पर चार डाक टिकट जारी करवाए थे। उनके मंत्रित्व-काल में ही पोर्ट लुई में नए आर्य भवन का शिलान्यास एवं उद्घाटन हुआ था। उनके सृजन पर रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से डॉ.कामता कमलेश के निर्देशन में संयुक्ता चौहान पीएचडी कर चुकी हैं।

उन्हें २००५ में मॉरिशस का प्रेज़िडेंट मेरिटोरियस अवार्ड मिला था। सन २०११ में मॉरीशस सरकार ने उन्हें देश का प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान 'एम.एस.के (मेम्बर ऑफ स्टार एंड कीज़ ऑफ इंडियन ओशियन)' प्रदान किया था।

प्रो० महावीर अग्रवाल, ने अपने भाषण में कहा कि भारत में जीवन के हर क्षेत्र को स्वामी दयानंद की विचारधारा ने प्रभावित किया है। यदि स्वामीजी ने शिक्षा के द्वार समाज के सभी वर्गों के लिए नहीं खोले होते, तो आज भारत में हर वर्ग में शिक्षित व्यक्ति दिखाई नहीं देते। भारतीय समाज में भारी परिवर्तन महर्षि दयानंद के संघर्षों के बाद ही आया था। प्रो० ज्वलंत कुमार शास्त्री ने कहा कि बरेली को यह श्रेय प्राप्त है कि यहाँ मुंशीराम के भीतर स्वामी श्रद्धानन्द बनने के बीज अंकुरित हुए। डॉ. अन्नपूर्णा आचार्या ने कहा कि बरेली में महर्षि दयानंद से प्राप्त ज्ञान ने स्वामी श्रद्धानन्द का आजीवन मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती ने की।

दोनों कार्यक्रमों का संचालन बिहारीपुर आर्यसमाज के मंत्री डॉ.श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

गतांक से आगे

'महर्षि दयानन्द का स्वप्न ही जिनका अपना स्वप्न था'
वैदिक विद्वान शिरोमणि पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

पंडित जी सन १९१८ में पं० मदन मोहन मालवीय द्वारा प्रयाग में स्थापित सेवा समिति के आजीवन सदस्य बनकर सहयोग करते रहे। आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उपसभापति भी रहे । ३० सितम्बर, १९३१ को हिन्दी साहित्य सम्मेलन के झांसी अधिवेशन के दर्शन सम्मेलन के आप सभापति बनाये गये थे। पंडित जी इण्टरमीडिएट बोर्ड, उत्तर प्रदेश के सदस्य भी रहे। अंग्रेज़ी के स्थान पर हिन्दी को परीक्षा एवं अध्यापन का माध्यम बनाने का प्रस्ताव भी आपने ही पहली बार किया और इसके लिए लगातार ३ वर्ष संघर्ष करके हिन्दी को कुछ विषयों के माध्यम के रूप में चुनने की छूट दिलाई। यह उल्लेखनीय है कि आपने अंग्रेज़ी के अस्वभाविक एवं बोझिल रूप को बोर्ड के सदस्यों के सम्मुख रखा एवं उन्हें अपने तर्कों एवं युक्तियों से सहमत किया।

हैदराबाद आर्य सत्यागह में आपको सत्याग्रह के फील्ड मार्शल महात्मा नारायण स्वामी द्वारा आन्दोलन के पक्ष में पुस्तकें तथा प्रतिपक्षियों के आक्षेपों का उत्तर तैयार करने का कार्य दिया गया। आरम्भ में शोलापुर में आयोजित आर्य महासम्मेलन में भी आप सम्मिलित हुए थे। मार्च १९३९ में प्रयाग लौटकर आप मई में पुनः दिल्ली आ गये और सत्याग्रह को सफल बनाने में जुट गये। जून १९३९ में आपको सत्याग्रह का पक्ष ब्रिटिश सरकार व संसद के सम्मुख रखने हेतु निजाम के फरमानों व सरकार के पत्रों का परीक्षण एवं उसकी प्रतियां प्राप्त करने का कार्य सौंपा गया जिसे आपने अत्यन्त परिश्रम करके सपलतापूर्वक सम्पन्न किया। अगस्त १९३९ में यह सत्याग्रह सफलता प्राप्त कर समाप्त हुआ। पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी का इस ऐतिहासिक सत्याग्रह में अविस्मरणीय योगदान रहा। आपके प्रयासों से दक्षिण भारत में आर्य समाज के प्रचार की नींव पड़ी। हैदराबाद सत्याग्रह के पश्चात आपने दक्षिण के अनेक प्रदेशों का भ्रमण कर प्रचार किया जिसके परिणाम स्वरूप मदुरै में आर्यसमाज की स्थापना हो सकी। मदुरै में आर्य महासम्मेलन का स्वप्न एवं उसे क्रियात्मक रूप देने का श्रेय भी आपको ही है जिसमें क्रान्तिवीर वीर सावरकर, महाशय कृष्ण, डा० मुंजे, श्री निर्मल चटर्जी, लाल नारायणदत्त शामिल हुए थे।

हैदराबाद सत्याग्रह की समाप्ति पर हैदराबाद के युवकों को आर्यसमाज के प्रचार हेतु तैयार करने के लिए शोलापुर में एक उपदेशक विद्यालय खोला गया जिसके आचार्य पं० गंगाप्रसाद जी थे। २०-२५ युवकों को प्रशिक्षण दिया गया। पं० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, पं० महेन्द्रकुमार शास्त्री एवं पं० गोपदेव जी जैसे दार्शनिक विद्वानों ने अध्यापक के रूप में इस उपदेशक विद्यालय में अध्ययन किया। यहाँ रहते हुए आपने दक्षिण भारत के राज्यों में आर्यसमाज का प्रचार भी किया। शोलापुर में ४००-५०० विद्वानों की उपस्थिति में आपकी जैनमत के एक विद्वान से दर्शनों पर वार्ता हुई। आपकी विद्वता से प्रभावित प्रतिपक्षी जैनी विद्वान ने कहा कि उपाध्याय जी की ऊहापोह एवं सूझबूझ से मैं प्रभावित हूँ। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री के पद के कार्यकाल में आपने सार्वदेशिक प्रकाशन लिमि. की स्थापना कर आर्य साहित्य के प्रकाशन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। वैदिक विद्वान पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड को साथ लेकर आपने दिल्ली स्थित विदेशी राजदूतों को आर्य साहित्य भेंट करने की एक योजना का भी श्रीगणेश किया था जिसका उद्देश्य विदेशियों को आर्य विचारधारा का ज्ञान कराना था।

सन १९५० में आप दक्षिणी अफ्रीका में वैदिक धर्म प्रचारक के रूप में भेजे गए। सन १९५१ में आप सिंगापुर एवं बैंकाक की प्रचार यात्रा पर गए। आपके पश्चात प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं आपके पुत्र डॉ० सत्यप्रकाश जी ने भी विश्व के अनेक देशों में वैदिक धर्म का प्रचार कर आपकी आंकाक्षा को साकार किया।

२५ अगस्त १९६८ को आपका देहान्त हुआ। प्राणोत्सर्ग के समय आप अपने पुत्र डॉ० सत्य प्रकाश जी से बातें कर रहे थे। बातें करते हुए आपका सिर उनकी गोद में गिर पड़ा। उपदेशक विद्यालय में आपके सहयोगी आचार्य महेन्द्र कुमार शास्त्री ने आपका मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि आप ऋषि दयानन्द के परमभक्त, सैद्धान्तिक ज्ञान के रहस्यविद, तपस्वी, त्यागी, स्वाध्यायशील, आर्यसमाज के नेता होकर भी परम लेखक, लेखनी के धनी तथा देश-विद्वतमुकुटमणि हैं। पंडित जी को गुदड़ी का लाल बताकर शास्त्री जी लिखते हैं कि उन्हें पाकर आर्य समाज सचमुच गौरवान्वित हुआ था।

पंडित जी ने अपने जीवनकाल में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू में विपुल वैदिक साहित्य की रचना की है। आस्तिकवाद, जीवात्मा, अद्वैतवाद उनकी प्रमुख दार्शनिक पुस्तकें हैं। अन्य विषयों पर भी उन्होंने पर्याप्त लिखा है। शंकरभाष्यालोचन, मुक्ति से पुनरावृति, मैं और मेरा भगवान, मीमांसा प्रदीप, कर्मफल सिद्धान्त, आर्यसमाज, सनातन धर्म और आर्य समाज, सायण और दयानन्द आदि उनकी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। उनकी पुस्तकों के गुजराती, मराठी, बंगला, तमिल एवं तेलुगु आदि भाषाओं में अनुवाद भी हुए है। अपने जीवन काल में आपने आर्य जगत की पत्र-पत्रिकाओं में सैकड़ों विद्वतापूर्ण रोचक व प्रभावशाली लेख लिखे। लगभग ३०० छोटे बड़े ग्रन्थों के प्रणेता और आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने आपकी विस्तृत जीवनी 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' नाम से लिखी है श्री जिज्ञासु जी ने आपकी अधिकांश पुस्तकों को 'गंगा ज्ञान सागर' के नाम से चार वृहदाकार खण्डों में प्रकाशित किया है। जिज्ञासु जी स्वयं को पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय का मानस पुत्र मानते हैं। डॉ० सत्य प्रकाश सरस्वती, उपाध्याय जी के बड़े पुत्र थे। आर्यसमाज बिजनौर में आपका जन्म हुआ था। आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन विभाग के अध्यक्ष रहे। आप रसायन शास्त्र में डी.एस.सी की उच्च शोधोपाधि से अलंकृत थे और लगभग दो दर्जन शोधार्थियों को आपने रसायन विज्ञान में पी.एच.डी. कराई। आप देश-विदेश के शीर्षस्थ वैज्ञानिकों के सम्पर्क में भी रहे और अनेक बार विदेश यात्रा कर प्रमुख वैज्ञानिकों से मिलते रहे। आपका अंग्रेज़ी का ज्ञान भी अत्यन्त उच्च स्तर का था। हमने विश्व व भारत में विख्यात एक वैज्ञानिक संस्थान - 'भारतीय पैट्रोलियम संस्थान, देहरादून' में आपके विज्ञान विषय के बिना नोटस् के सहारे धारा प्रवाह अंग्रेजी में व्याख्यान सुने हैं। आप विलक्षण बुद्धि से सम्पन्न थे जिसका ज्ञान आपके प्रवचनों को सुनकर हुआ करता था। आपने अनेक छोटे बड़े ग्रन्थ लिखे। आपका सबसे बड़ा लेखकीय कार्य अंग्रेज़ी भाषा में चार वेदों का भाष्य है जो अनेक खण्डों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली से मात्र दो हज़ार रुपयों में उपलब्ध है। हमने डॉ० सत्य प्रकाश जी के प्रवचन आर्यसमाज देहरादून में ३०-३५ वर्ष पूर्व सुने थे जिनका हम पर गहरा प्रभाव हुआ था। आज भी उनके कुछ शब्द हमें स्मरण हैं। आपने अपने व्याख्यान में एक महत्वपूर्ण बात यह कही थी कि ईश्वर ने सृष्टि को बनाया और इसमें एक सूर्य की रचना की जो प्रकाश व ताप देता है। उसी ने सूर्य को सार्थकता प्रदान करने के लिए हमें व हमारी आँखों को बनाया है। इसी प्रकार शरीर में जितनी भी इन्द्रियाँ व अवयव हैं, उनको सार्थकता प्रदान करने के लिए जगदकर्ता ने सृष्टि में उनके विषय बनाये हैं। पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय ने अपने जीवन में सामाजिक हितों को पारिवारिक हितों पर वरीयता देकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को अपना स्वप्न बनाया था। उनकी सभी उपलब्धियों की गणना करना अत्यन्त कठिन कार्य है। आर्य समाज उनको पाकर धन्य हुआ और वह भी आर्यसमाज उनको पाकर धन्य हुआ और वह भी आर्य समाज को पाकर धन्य हुए। उनकी एक उपलब्धि यह भी है उन्होंने आर्य समाज को एक वैज्ञानिक तथा अंग्रेज़ी का वेद भाष्यकार पुत्र दिया जिसने आर्यसमाज को नई पहचान दी। हमारा सौभाग्य रहा कि हमने उनके अनेक प्रवचन सुने और उन्हें स्मरण कर आज भी हमें रोमांच हो उठता है। उन डॉ० सत्यप्रकाश जी की अनुपस्थिति में हम आर्य समाज में सूनापन का सा अनुभव करते हैं। उनकी १३३ वीं जयन्ती पर हम उनको अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

मनमोहन कुमार आर्य, १९६ चुक्खूवाला - २, दूहरादून - १

प्रेषक - श्री हरिदेव रामधनी, आर्य रत्न, मन्त्री आर्य सभा मॉरीशस

Some Important Things- A writer should note & always take into serious consideration.

Sookraj Bissessur (BA Hons)

"Vedas are the scriptures of true knowledge. It is the first duty of the Aryas to read them, teach them, recite them and hear them being read." ***3rd Principle of Arya Samaj.***

A good Writer should always know and understand what the three letters of word **AUM**- stand for- (that is) God's fundamental name is **AUM**- made of three letters- **AUM**- which represent God manifests- in the aspects of Creator, Preserver and Destroyer. They also can note that every object exists in the tree of birth, existence and death.

Reading – is a very lonely and solitary practice.

Writing – is too a very exhausting, but highly exciting and experiencing practice.

We are -- What we read and it should be well noted that books eventually open the world.

"**Reading** makes the full man-
Conference makes the ready man-
Writing makes the exact man." *Francis Beacon*

Reading and Writing – offer to man a huge paragon of virtues.

Profound Reading – inculcates in a man's mind much food for thoughts.

A Writer – should always note with deep and profound concern that we must always value hard work and honest persons.

A Writer – should always opine that patience bears its own fruits.

Writers - do always unanimously agree and accept that we can fight with men-but not with our Destiny.

Prominent and good writers are always conscious of the fact about the three kinds of Progress- that by physical, intellectual and spiritual progress man virtually attains perfection in life.

Writers – should always be aware and also conscious of the three forms of Truth :- That truth must become practical in thought(s), word(s) and deed(s).

The last but not the least - all writers of the entire world should always study, read, judge, analyse as well as scrutinize with huge sense of seriousness of purpose, profundity and avidity- the "Magnum Opus" of Maharshi Dayanand Saraswatee's- Satyarth Prakash/ Light of Truth which is most surely and certainly an eye-opener, a path-maker and also a precious guidance for all the world's citizens in this world of suffering, tool, tension, pretension and sensation.

A person who reads is worth ten.

Om ! Agnimidé purohitam yajyasya devamritvijam. Hotāram ratnadhātamam.

Rig Veda 1/1/1

cont. from pg. 1

Interprétation / Anushilan

Dans le contexte de ce mantra il y a l'emphase sur l'aspect spirituel d'Agni et en voici l'essentiel : « O Seigneur! Vous êtes aussi brillant que le feu, et notre guide spirituel par excellence!

Vous détenez tout le savoir (c'est-à-dire, toutes les disciplines de la connaissance), la lumière resplendissante et toute la richesse du monde matériel. Vous êtes le plus grand sage et le Maître Suprême de l'univers.

De toute éternité vous êtes notre protecteur et notre bienfaiteur. C'est sous vos meilleurs auspices que nous entreprenons toutes nos prières, nos cérémonies religieuses, ou nos rites. Conséquemment, par votre grâce divine nos désirs légitimes et nos voeux les plus sincères sont exaucés, et nous sommes comblés de bonheur, de prospérité et de paix dans notre vie.

En outre, toute vos qualités divines, telle une parure faite de mille pierres précieuses, vous confère un air majestueux.

En toute humilité nous vous offrons notre vénération du fond du coeur.

En guise de conclusion nous pouvons présumer que Dieu, est la source de toute lumière qui éclaire l'univers. Il possède toute la connaissance du monde et la richesse matérielle.

Dans toute sa sagesse et sa magnanimité et afin de ne pas laisser l'humanité au dépourvu, dès la création du monde Le Seigneur a transmis à l'homme, pour son salut, toute la connaissance en lui donnant les Védas par le truchement de quatre sages (Rishis) qui sont : 'Agni', 'Vayu', 'Aditya' et 'Angira'.

Tout comme les parents et les maîtres ('Gurus' en Hindi) font l'éducation de leurs progénitures, Le Seigneur parfait la connaissance de l'homme à travers l'enseignement des Vedas par des sages interposés.

Ici des questions peuvent être posées par les fidèles, et il ya les réponses en provenance des Vedas.

Q. Que préconise les Vedas pour le bien-être de l'homme?

R. D'adopter la voie du salut.

Q. Quelle est cette voie?

R. C'est la voie de la vérité, du travail, de la persévérance, du progrès et de la réussite, éclairée par la lumière du savoir qui nous protège et nous mène vers le but ultime de la vie sur la terre. C'est vers 'La Félicité Eternelle'/ Le Bonheur Suprême ou 'Moksha' (en Hindi).

Une Question pertinente des fidèles :

Pourquoi doit-on avoir recours au Agni pour toutes nos prières ou cérémonies religieuses ?

La Réponse appropriée du fondateur de L'Arya Samaj, Le Grand Swami Dayananda – en Hindi :

'Agni sab devtāon ké doot hé.'

Interprétation élaborée

Agni est l'intermédiaire entre toutes les forces ou tous les éléments de la nature – le soleil, la terre, l'air, l'atmosphère, les nuages, l'eau, le vent, l'espace, etc.

C'est lui qui consomme toutes les oblations que l'on consacre au feu sacré du Yajna, les transforme en éléments subtils, essentiels et bénéfiques. Ensuite il les répand dans l'atmosphère en les transmettant aux différents éléments de la nature.

Conséquemment ce phénomène occasionne la purification de l'atmosphère, de l'eau pluviale et de la terre pour la rendre plus productive afin de créer un environnement sain pour le bien-être de l'humanité et de toutes les autres créatures de la terre.

Note sur les trois aspects ou phases d'Agni

(i) **Adhibhowtik** – C'est l'aspect matériel ou physique

(a) Ce feu matériel joue un rôle primordial dans notre vie spirituelle. Toutes nos prières ou rites doivent commencer par l'utilisation d'Agni (le feu).

Ce feu sacré du yajna, à part ses bienfaits à la nature et au monde, purifie l'esprit du fidèle et exalte son âme.

(b) Le feu est très utile dans notre vie quotidienne et aussi dans toutes les entreprises, les usines, les industries, et les moyens de transport, entre autres

(c) Le feu est purificateur. Il détruit toutes les immondices et toutes autres impuretés sur son passage et les réduisent en cendres.

(d) Le feu est symbole de la vie.

Aussi longtemps que l'on est en vie, notre corps dégage une certaine chaleur. Après la mort le corps se refroidit pour de bon.

(e) Le feu est présent dans tous les éléments de la nature sous diverses formes.

(ii) Adhidayvik : L'aspect naturel et psychologique : C'est l'excès de chaleur, de froid et d'autres intempéries de la nature qui affectent l'homme et son état–d'esprit ou son courage moral pour affronter ces situations très inconvénientes ou fâcheuses.

(iii) Adhyatmik : C'est l'aspect spirituel qui désigne Dieu et L'âme.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

Swami Dayanand His Educational Philosophy

Nishan Gudgadhur, Mahebourg Yuvak Sangh

Swami Dayanand Saraswatee strongly believed that formation of character was not possible if the students were not taught their duty to God and Man. This is why he laid great emphasis on giving the youth religious and moral training. He had no sympathy for a system of education which was divorced from character-building. Hence, Swamiji gave the following direction to the parents : "It is the bounden duty of all parents to instil good thoughts into the minds of their children in their early impressionable years. The young minds should be diverted from thoughts of evil. Let them not grow up in idleness. Let them learn to shun falsehood and evil passions like anger and hatred. Let them be trained in such a way as to grow up into men of unblemished character."

Swami Dayanand insisted that students should lead a life of celibacy. For a student's life he advocated penance (tapasya) and not indulgence, sacrifice and not selfishness, simplicity and not luxury, dharma and not atheism, service and not enjoyment, duty and not pleasure. These indeed are high virtues which would ultimately build the national character.

Another essential feature of Swami Dayanand's scheme of education is practical personal hygiene. In this respect the students are required to follow the routines of a disciple in the ancient gurukul, such as rising early in the morning, daily bath, prayer, physical exercise and so on. No doubt , the health of students is sure to be better if they are urged to acquire these excellent habits.

Swamiji was a staunch advocate of democratization of education. He gave a unique conception of the duty of the state for educating its citizens. The elimination of all distinctions of caste, class and sex in the matter of education and the advocacy of financing education at all the stages by the State are concepts based on fundamental principles of democratic socialism. He believed that both boys and girls have equal right to education. He used to quote from the Atharva Veda to prove that girls should also practise Brahmacharya and receive education.

The intimate relationship between the teacher and the taught on the ancient gurukula pattern is also an essential feature of Swami Dayanand's educational philosophy. He advocated that students should find in their guru the love of the parents and the teacher should accept the students as members of his family.

Last but not least, Swamiji condemned foreign language as the medium of instruction. In fact his language policy was very much responsible for the timely development of the Hindi language. Though he was a Sanskrit Scholar Gujrati-speaking. He always wrote in Hindi and advocated its wide use in all spheres of activity. Swamiji was of the conviction that a sound system of education must make a student feel proud of his language, his country, his cultural heritage and his nation's achievements.

By way of conclusion, let us ask ourselves one question – what can we basically imbibe from the educational philosophy of Swami Dayanand to make our educational system what it should be?

Launching of Grand Port Arya Yuvak Sangh

Ravi Leelachand

The Grand Port Arya Zila Parisahd was founded some forty years back. Now we have been able to witness the launching of the Grand Port Arya Yuvak Sangh. The function was held on 28th September 2014 at the Mahebourg Arya Samaj. Members of different Yuvak Sanghs were present on that occasion. There were youngsters of the Yuvak Sanghs of Mahebourg, Trois Boutiques, Bois des Amourettes, Rivière du Poste and so on.

This is a remarkable event marks the materialization of a long cherished dream. Members of Mauritius Arya Sabha and the Grand Port Arya Zila Parishad have actually made a laudable effort in the launching of the 'Grand Port Yuvak Sangh' which will definitely cater for the needs of our Arya Yuvak and Yuvatis. It will organize such activities as will help to bring about radical changes in the life of each and everyone. Exchange programmes among youngsters will now become possible and there will be regular meetings among them.

The Grand Port Arya Yuvak sangh, under the aegis of Arya Sabha Mauritius and in collaboration with Grand Port Zila Parishad will regularly be organizing the following activities:

(1) Reorganizing and motivating youth to get fully involved in Vedic Dharma and participating fully in the related activities.

(2) Organizing Youth Camp and conducting yoga classes.

(3) Activating youngsters in all activities related to Vedic Dharma and making sure that they play their role with their participation in various activities.

(4) Promoting Bhajan and Kirtan by setting up Bhajan Mandalies.

(5) Organising Dharmic competitions like Quiz, Debate, Essay writing and Elocution contest.

(6) Fund Raising activities to consolidate the fund of the Yuva Samiti.

Dear brothers and sisters ! Youth is the blooming period of human life, full of vitality, lots of passion and aspirations. Let us put in our efforts together so as to create a better society. May we be inspired by 'dhiyo yo naho prachoday□ta', praying to the Almighty to illuminate our intellect, enhance our initiatives and guide our minds and hearts on the path of righteousness.

OM
ARYA SABHA MAURITIUS
NEW BOOKS AVAILABLE
at Dhruvanand Pustakalaye

cont. from last issue

S/N	NAMES OF BOOKS
51.	Arya Parva Paddhati
52.	Bhasha Vigyan - Bholanath Tiwari - (hindi)
53.	Kavya Shastra (hindi)
54.	Naye Yug ki lor Arya Samaj (hindi)
55.	Varnocharan Shiksha
56.	Vedon ke Rajniti Siddhant 3 vols
57.	SatBhakti Darpan (Hindi)
58.	Om The Symbol of God
59.	Vedic Vision
60.	Children Quest (Basic Spiritual guide for modern Children)
61.	Quest the Vedic Answers for Adults
62.	Upanishad Prakash
63.	Ekadashopnishad
64.	Saral Sanskrit Balbodh-
65.	Saral Sanskrit Shiksha Part -1 to Part 4
66.	Saral Sanskrit Shiksha (English) Part - 5
67.	Saral Sanskrit Shiksha Kovida part 6,7, 8 71. Sanskrit Samanya Gyanam two vols
68.	Mahabharat English
69.	Gayatri Rahasya English
70.	Shri Madbhagawad Gita by Sayavrat
71.	Upanishads by Dr. Satyavrat
72.	Arya Samaj-Lala Lajpatrai
73.	Jivan Charit Swami Dayanand
74.	Jivan Charit Swami Darshnanand
75.	Jivan Charit Swami Shraddhanand
76.	Pandit Lekhram - Swami Shradhanand
77.	Dharma ka Aadi Shrot - Pandit Ganga Prasad
78.	Bharat Bharti
79.	Dharmik Shiksha Part -1 to Part - 8
80.	Vyawahar Bhanu
81.	Sanskrit Shiksha Part - 1 to Part - 3 (Dr Kapildev Teewari)
82.	Prashnanopnishad
83.	Geeta (Geeta Press Gonakhpur)
84.	Yajurveda Samhita by Swami Jagdishwaranand ji (Hard Bound)
85.	Back to Vedas
86.	Gulati
87.	Beliefs of Arya Samaj
88.	Glimpses of The Rig Veda
89.	Glimpses of The Sama Veda
90.	Glimpses of The Atharva Veda
91.	Glimpses of The Yajur Veda
92.	Rational faith in God
93.	Vedon ki Ore
94.	Maharishi Dayanand ki jaroorat kyon
95.	Light of Truth